ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे | निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 27 अंकः 52 बुलेटिन अवधिः 4 – 8 जुलाई, 2018 दिनः मंगलवार दिनाँकः 3 जुलाई, 2018

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	04/07/2018	05/07/2018	06/07/2018	07/07/2018	08/07/2018
वर्षा (मिमी0)	25	10	5	0	10
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	29	32	33	34	35
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	24	23	23	24	23
बादल आच्छादन	घने बादल	घने बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	95	85	80	80	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	55	50	45	40	50
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	002	004	004	004	006
वायु की दिशा	दक्षिण–दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण–पश्चिम	पूर्व	दक्षिण–पश्चिम	दक्षिण–दक्षिण–पूर्व

आगामी 4 जुलाई को मध्यम वर्षा तथा 5, 6 व 8 जुलाई को हल्की वर्षा होने के साथ आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहने की सम्भावना है।

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (26 जून – 2 जुलाई 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से घने बादल छाये रहे। अधिकतम तापमान 33.0 से 40.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 24.5 से 28. 9 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 74 से 95 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 40 से 90 प्रतिशत एवं हवा 6.7 से 15.1 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पूर्व–दक्षिण–पूर्व दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्श

फसल प्रबन्धः

❖धान की रोपाई से पूर्व खेत मे सिंचाई के लिए नाली तथा जल निकास की समुचित व्यवस्था करें।

❖धान की पौध मे 4–5 पत्ति हो जाय तो इनकी रोपाई कर सकते है। यह अवस्था जल्दी पकने वाली प्रजातियो मे 18 दिन बाद तथा मध्यम अवधि की प्रजातियो मे 20–25 दिन बाद पर आती है।

❖धान की पौधशाला मे पौध उखाड़ने से 24 घंटा पहले 4–6 सेमी0 पानी भरना चाहिए। एक–एक पौध को सावधानी से उखाड़े तथा जड़ की धुलाई कर उसकी अविलम्ब रोपाई करे।

❖ खेत मे कीचड़ बनाना शुरु करने से 15 दिन पहले खेत की सिंचाई करें ताकि खरपतवारो का जमाव हो जाये। फिर खेत मे कीचड़ बनाने से 10–12 घंटा पहले पानी भर कर ट्रकटर में केज व्यूल तथा खुटी दार हैरो से 2–3 बार जुताई करे। पाटा लगाकर खेत को समतल करे।

❖लेव लगाने के 10–15 घंटे बाद रोपाई करें।

❖धान की रोपाई से पहले उसकी जड़ों को कार्बेन्डाजीम 1 ग्राम/लीटर के घोल में आधे घण्टे तक भिगोने के बाद रोपाई करें।

❖धान की मध्यम अवधि वाली किस्मो की रोपाई जुलाई के प्रथम सप्ताह तक तथा शीघ्र पकने वाली किस्मो की रोपाई जुलाई के तीसरे सप्ताह तक अवश्य पूरा कर ले।

❖धान की रोपाई हेतु पंक्ति से पंक्ति की दूरी 20 सेमी0 तथा पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी0 रखें तथा एक स्थान पर 2–3 पौधे लगाने चाहिए, रोपाई 2–3 सेमी0 गहराई से ज्यादा नहीं करनी चाहिए। रोपाई से 10 दिन के अन्दर मरे पौधों की जगह फिर से रोपाई करें।

❖गन्ने की फसल में जलभराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें माह के प्रथम सप्ताह में जड़ों पर हल्की मिट्टी चढ़ायें। फसल बढ़वार अच्छी होने पर 5 फीट की ऊंचाई पर बंधाई कर लें।

❖मक्का की फसल में यथासमय निराई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें तथा फसल 2 फीट ऊंचाई की होने पर नत्रजन की टाप ड्रेसिंग करें।

❖सोयाबीन की उन्नत प्रजातिया जैसे पी. एस. 1042, पी. एस. 1241, पी. एस. 1347, पी. एस. 1225, पी. एस. 19 आदि की बुवाई प्रथम सप्ताह में करें। बीज दर 75किग्रा/हैक्टेयर से करें बीज को राइजोबियम से उपचारित कर 45 से 60 सेमी की दूरी में पंक्तियों में 3 से 4 सेमी गहराई में करें। बुवाई के समय 20 किग्रा N_2, 60 किग्रा P_2O_5 और 40 किग्रा पोटाश/है0 का प्रयोग करे।

उद्यान प्रबन्धः

❖कद्दु वर्गीय फसलों की पत्तियो पर अनियमित आकार में पीले धब्बे दिखाई पड़ने पर पत्तियो को उलटकर निरीक्षण करें यदि निचली सतह पर हल्के धूसक रंग की फॅफूदी की बढ़वार दिखाई दे तो नियत्रंण के लिए मेन्कोजेब 2.5 किग्रा0/ली0 की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

❖मिर्च की फसल में ऊपर से डन्ठल काले पड़कर सूखने की समस्या की निदान हेतु संक्रमित शाखाओं को तोड़कर हटा दें एवं फल सड़न की समस्या हेतु कार्बेन्डाजिम का 0.1 प्रतिशत की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

❖भिण्डी की पछेती फसल मे पत्तियो की शिराये पीली पड़ने पर संक्रमित पौधो को उखाड़ दे तथा रोगवाहक कीटो के नियंत्रण हेतु किसी सर्वांगी कीटनाशी का छिड़काव करे।

❖टमाटर की फसल मे पत्तियो पर धब्बे पड़ने एवं झुलसने पर मैनकोजेब 2.5 ग्राम/लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करे।

❖वर्षाकाल में 10–12 किग्रा भिण्डी के बीज की आवश्यकता होती है। बोने से पहले बीज का उपचार कवकनाशी दवा से करें बीज बुवाई की दूरी कतार से कतार 60 सेमी तथा पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी रखें तथा शेष पौधों को उखाड़ दें।

❖भिण्डी की वर्षा कालीन प्रजातियां वर्षा उपहार, पंजाब पद्मिनी, पंजाब–7, पंजाब–1, अरका, अनामिका, अभय, परभनी क्रांति आदि जिसमें पीट शिरा रोधक क्षमता पायी जाती है का चुनाव करें।

- ❖ आम की मध्यम अवधि मे पकने वाली किस्मो की तुड़ाई प्रारम्भ करे।
- ❖ आम की तुड़ाई प्रातः अथवा सांयकाल में फलो की लगभग 8–10 मि0मी0 डंठल सहित तुड़ाई करे।
- ❖ तुड़ाई किये जाने वाले फलो को सीधे मिट्टी के सम्पर्क में नही आने देना चाहिए ।
- ❖ भण्डारण से पूर्व फलो को साफ पानी से धोकर छॉव मे पूरी तरह सुखा लें।
- ❖ शीत ग्रह में दशहरी प्रजाति को 12 डिग्री सेल्सियस एवं लंगड़ा को 15 डिग्री सेल्सियस पर भण्डारित करना चाहिए।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ पशुओ को संक्रामक रोग से बचाने हेतु टीकाकरण करवायें।
- ❖ जुलाई एवं अगस्त महीना गाय/भैंसों की ब्याने का समय होता है अतः प्रसव प्रकोष्ठ को साफ–सुथरा करके इस्तेमाल हेतु तैयार रखें।
- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।
- ❖ मानसून के प्रारम्भ में अचानक तेज घूप व तेज वर्षा से पशुओं को बचायें क्योंकि इसकी वजह से त्वचा में जलन जैसा विकार उत्पन्न हो जाता है।
- ❖ इस ऋतुओं में कृमियों का प्रकोप बढ़ जाता है और इससे बचने के लिए कृमिनाशक का उपयोग निकटतम पशु चिकित्सक की सहायता से करें।
- ❖ ज्यादा हरे चारे से घोड़ों में केलिक होने का खतरा रहता है अतः इससे बचें।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विश्वविद्यालय, पन्तनगर